मोटे अनाजों का अंतरराष्ट्रीय वर्ष-2023

"हमारी जमीन और हमारी थाली में विविधता होनी चाहिए। अगर खेती इकहरी फसल वाली हो जाए तो इसका बुरा असर हमारे और हमारी जमीन के स्वास्थ्य पर पड़ेगा। मोटे अनाज हमारी खेती और हमारे भोजन की विविधता बढ़ाते हैं। 'मोटे अनाजों के प्रति सजगता बढ़ाना' इस आंदोलन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। लोग और संस्थाएं- दोनों ही बड़ा प्रभाव छोड़ सकते हैं। संस्थाओं के प्रयास से मोटे अनाजों के उत्पादन को बढ़ावा दिया जा सकता है और समुचित नीतियाँ अपना कर इनकी फसल को फायदेमंद बनाया जा सकता है। दूसरी ओर, लोग भी स्वास्थ्य के प्रति सजग रहते हुए मोटे अनाजों को अपने आहार में शामिल करके इस पृथ्वी के अनुकूल विकल्प चुन सकते हैं। मुझे विश्वास है कि 2023 में मोटे अनाजों के अंतरराष्ट्रीय वर्ष का यह आयोजन सुरक्षित, टिकाऊ और स्वस्थ भविष्य की दिशा में एक जन आंदोलन को जन्म देगा।"

– रोम (इटली) में खाद्य एवं कृषि संगठन के मुख्यालय में मोटे अनाजों के अंतरराष्ट्रीय वर्ष के उद्घाटन समारोह के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी का संदेश

संयुक्त राष्ट्र महासभा ने मार्च 2021 में अपने 75वें अधिवेशन में वर्ष 2023 को 'मोटे अनाजों का अंतरराष्ट्रीय वर्ष' (इंटरनेशनल इयर ऑफ मिलेट्स-2023) घोषित किया है। प्रधानमंत्री की दृष्टि और पहल का ही यह नतीजा था कि विश्व भर के 70 से अधिक देशों ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया। इस आयोजन से विश्व भर में टिकाऊ खेती में मोटे अनाजों की भूमिका और बढ़िया तथा बेहतर आहार के रूप में इन अनाजों के फ़ायदों के बारे में सजगता फैलेगी। भारत में प्रति वर्ष 170 लाख टन मोटे अनाजों का उत्पादन होता है जो एशिया के कुल उत्पादन के 80 प्रतिशत से अधिक है। इस तरह भारत इन अनाजों के उत्पादन का प्रमुख केंद्र बन सकता है। भारत में सिंधु घाटी सभ्यता में सर्वप्रथम इन अनाजों के होने के प्रमाण मिलते हैं और ये भोजन के लिए उपजाए जाने वाली सबसे प्राचीन उपजों में रहे हैं। ये अनाज करीब 130 देशों में उगाए जाते हैं और एशिया तथा अफ्रीका में करीब 60 करोड़ लोगों का पारंपरिक भोजन हैं।

मोटे अनाजों का
अंतरराष्ट्रीय वर्ष
2023

भारत सरकार ने 'मोटे अनाजों के अंतरराष्ट्रीय वर्ष-2023' को जन-आंदोलन की तरह आयोजित करने की घोषणा की है ताकि भारतीय मोटे अनाजों, पकवानों और मूल्य-संवर्धित उत्पादों को वैश्विक पहचान मिले। मोटे अनाजों का वैश्विक उत्पादन बढ़ाने, प्रसंस्करण और उपभोग के बेहतर तरीके अपनाने, फसलों में फेर-बदल कर उनका बेहतर उत्पादन और खाद्य-पदार्थों में मोटे अनाजों का अनुपात बढ़ाते हुए खाद्य-प्रणालियों से इन्हें बेहतर तरीके से जोड़ने के लिए 'मोटे अनाजों का अंतरराष्ट्रीय वर्ष' अनूठा अवसर प्रदान करता है।

खाद्य और कृषि संगठन (एफ़एओ) ने अपने संक्षिप्त संदेश में कहा है कि इस वर्ष के आयोजन का उद्देश्य सदस्य देशों और अन्य हितधारकों को शामिल करते हुए मोटे अनाजों की टिकाऊ तरीके से खेती और उपभोग के प्रति जागरुकता बढ़ाना है। मोटे अनाज मानव जाती द्वारा उपजाई जाने वाली सबसे पुरानी फसलों में हैं। अतीत से ही ये अनाज प्रमुख खाद्य-स्रोत रही हैं। अब आवश्यकता है कि ये हमारे भावी भोजन में भी शामिल हों।

हम सदी की सबसे बड़ी महामारी के बाद, एक युद्ध को भी झेल रहे हैं। इसलिए खाद्य सुरक्षा अब भी हमारी चिंता बनी हुई है। जलवायु परिवर्तन का भी खाद्य-उपलब्धता पर असर पड़ सकता है। ऐसे समय में मोटे अनाजों के उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए एक वैश्विक आंदोलन की आवश्यकता है क्योंकि इन अनाजों को उगाना आसान है और ये खराब जलवायु तथा सूखे को झेल सकते हैं। मोटे अनाज - उपभोक्ता, किसान और जलवायु - सभी के अनुकूल हैं। ये संतुलित पोषण के अच्छे स्रोत हैं। इनकी फसल के लिए कम पानी की ज़रूरत होती है और इन्हें प्राकृतिक तरीके से उगाया जा सकता है। इसलिए इन्हें उपजाने से किसानों को भी फायदा है और ये पर्यावरण के भी अनुकूल हैं।

'मोटे अनाजों का अंतरराष्ट्रीय वर्ष' इन अनाजों के स्वास्थ्य और पोषण संबंधी फ़ायदों एवं खराब तथा परिवर्तनशील जलवायु में भी पनप सकने की इनकी क्षमता के प्रति जागरुकता पैदा करने और नीतियाँ बनाने का अवसर प्रदान करेगा। यह मोटे अनाजों के निरंतर उत्पादन को बढ़ावा देने का भी अवसर प्रदान करेगा और इन उत्पादकों तथा उपभोक्ताओं के लिए टिकाऊ बाज़ार बना सकने की इन अनाजों की क्षमता को भी रेखांकित कर सकेगा।

'मोटे अनाजों का अंतरराष्ट्रीय वर्ष' सतत (टिकाऊ) विकास के लिए संयुक्त राष्ट्र के वर्ष 2030 के लक्ष्यों - खास तौर से निम्न लक्ष्यों की प्राप्ति में भी योगदान दे सकेगा - खास तौर से सतत विकास लक्ष्य-2 - भुखमरी की समाप्ति, सतत विकास लक्ष्य-3 - अच्छा स्वास्थ्य तथा आरोग्य, सतत विकास लक्ष्य-8-सम्माननीय आजीविका तथा आर्थिक प्रगति, सतत विकास लक्ष्य-12 -टिकाऊ उपभोग तथा उत्पादन, सतत विकास लक्ष्य-13-बेहतर पर्यावरण और सतत विकास लक्ष्य-15 - पृथ्वी पर जीवन।

1. मोटे अनाजों की टिकाऊ खेती से खराब जलवायु में भी टिक सकने वाली फसलें हो सकेंगी।

सतत विकास लक्ष्य-13 - बेहतर पर्यावरण और सतत विकास लक्ष्य-15 - पृथ्वी पर जीवन

- मोटे अनाज की फसलें सूखी जमीन पर न्यूनतम देख-रेख के साथ भी हो सकती हैं। दूसरे अनाजों की तुलना में ये फसलें कीट-पतंगों और मौसम के बड़े बदलावों से भी कम प्रभावित होती हैं।
- देश के कृषि क्षेत्र में मोटे अनाजों का उत्पादन करने और इसे बढ़ाने से अधिक कुशल, समेकित, आपदा-प्रतिरोधी और टिकाऊ कृषि-खाद्य प्रणाली विकसित होगी जिससे बेहतर पोषण, बेहतर पर्यावरण और बेहतर जीवन हासिल हो सकेगा।

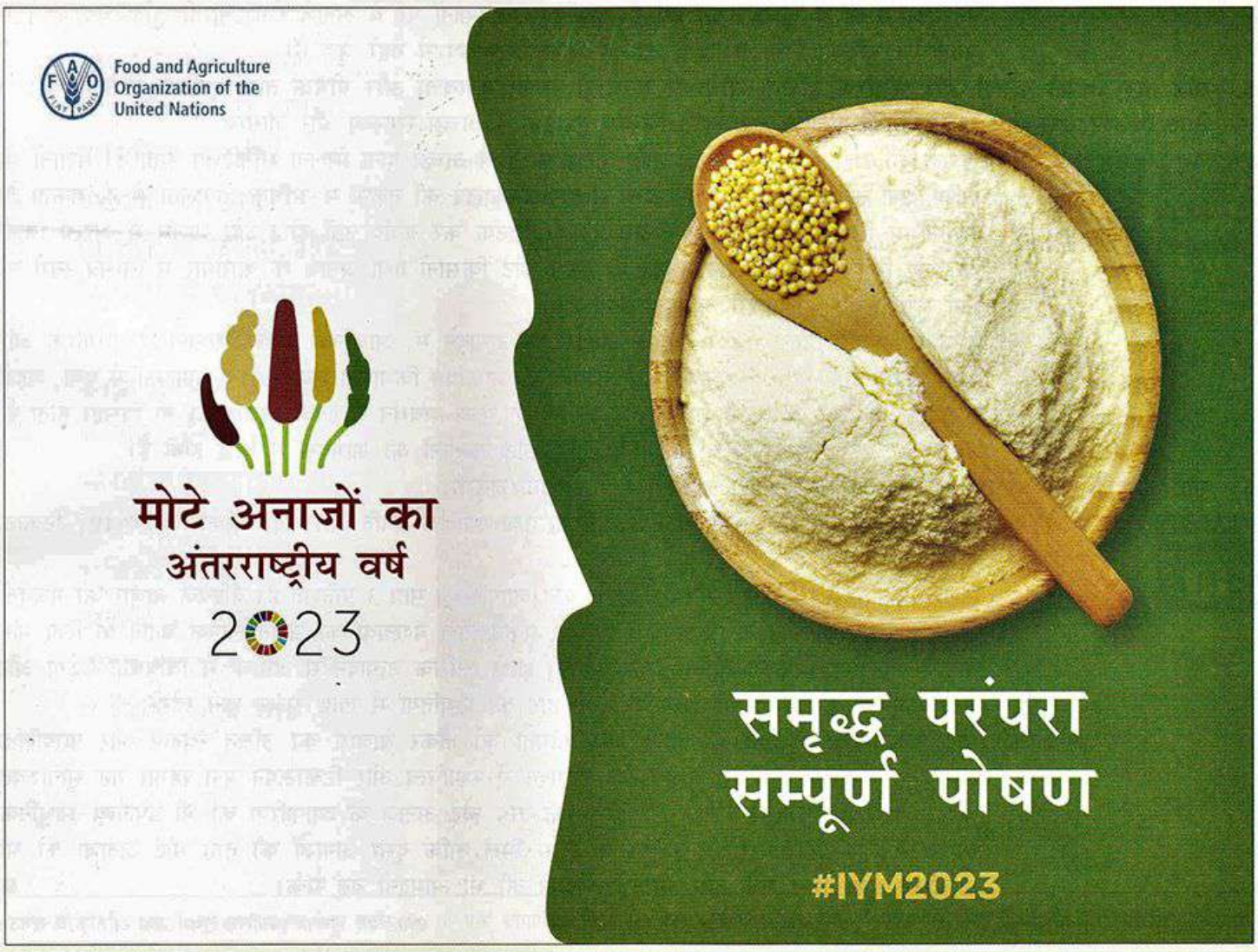

2. मोटे अनाजों की टिकाऊ खेती से भुखमरी दूर की जा सकती है और खाद्य सुरक्षा तथा पोषण सुनिश्चित किया जा सकता है।

सतत विकास लक्ष्य-2 – भुखमरी की समाप्ति

- बारिश की कमी वाले इलाकों में सूखे मौसम में केवल मोटे अनाजों की ही खेती हो पाती है। ऐसे में लोगों के भोजन के लिए केवल यही अनाज उपलब्ध हो पाते हैं। ऐसे बुरे वक्त में मोटे अनाज ही भूख से निजात दिला पाते हैं और अभावग्रस्त लोगों के लिए खाद्य सुरक्षा और पोषण सुनिश्चित करते हैं।
- मोटे अनाज खराब, सूखी जमीन में भी पैदा हो जाते हैं और जमीन के पोषक तत्वों को समाप्त नहीं करते। सूखी जमीन पर भी हरियाली का आवरण उपलब्ध करा कर, ये फसलें जमीन को बंजर होने से रोकती हैं और जैव-विविधता बढ़ाने तथा मिट्टी की उर्वरता को टिकाऊ बनाए रखने में मदद करती है।

3. मोटे अनाज पौष्टिक आहार का महत्वपूर्ण हिस्सा बन सकते हैं।

सतत विकास लक्ष्य-3 – अच्छा स्वास्थ्य तथा आरोग्य

- मोटे अनाज भोजन में खनिजों, फाइबर, एंटी-ऑक्सीडेंट्स और प्रोटीन के अच्छे स्रोत हैं। इनका ग्लाइसेमिक इंडेक्स कम होता है इसलिए ये उच्च रक्त-शर्करा वाले लोगों के लिए अच्छे हैं। ये ग्लूटेन-रहित भी होते हैं तथा लौह-तत्व की कमी वाले आहार में लोहे के अच्छे स्रोत हैं।
- मोटे पिसे रूप में, प्रत्येक मोटा विभिन्न प्रकार के फाइबर के स्रोत हैं। फाइबर-युक्त (रेशा-युक्त) भोजन पाचन ठीक रखने तथा खून में शर्करा तथा वसाओं की मात्रा संतुलित रखने में सहायक होते हैं।

4. मोटे अनाजों की ज्यादा खपत होने से छोटे किसानों की आजीविका बेहतर होती है।

सतत विकास लक्ष्य-8 –सम्माननीय आजीविका तथा आर्थिक प्रगति

- लोगों द्वारा आहार में गेहूं, मक्का और चावल को अधिक प्राथमिकता दिए जाने से मोटे अनाजों की मांग और उत्पादन कम हुआ है। मोटे अनाजों के उपभोग और इनके बाजार को बढ़ावा मिलने से छोटे किसानों की अतिरिक्त आमदनी होगी और खाद्य-क्षेत्र में आर्थिक प्रगति को बढ़ावा मिलेगा।
- मोटे अनाज मानव-जाति द्वारा सबसे पहले उगाई जाने वाली फसलों में थे और शताब्दियों तक ये अनाज दक्षिणी अफ्रीका और एशिया में लाखों लोगों का प्रमुख आहार बने रहे। इन अनाजों का स्थानीय संस्कृतियों और परम्पराओं में गहरा स्थान रहा है। इसलिए उन स्थानों पर ये अनाज खाद्य गारंटी सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं जहां ये सांस्कृतिक रूप से गहरे जुड़े हैं।

5. मोटे अनाजों की फसल और भंडारण उचित तरीके से करने से इनकी गुणवत्ता और पोषक तत्व सुरक्षित रहते हैं।

सतत विकास लक्ष्य-2 – भुखमरी की समाप्ति तथा सतत विकास लक्ष्य-3 – अच्छा स्वास्थ्य और आरोग्य

- फसल की सही समय पर कटाई और कुटाई करने से अच्छा दाना मिलना सुनिश्चित होता है। मशीनों के जरिए दानों का छिलका निकालना हाथ से दाना निकालने की तुलना में अधिक कुशलता से हो सकता है। मशीनों से छिलका निकालने से अनाज दूर-दूर छिटक कर बर्बाद नहीं होता और बाजार में अच्छी बिक्री के लिए बिना टूटे साबुत दाने मिलते हैं। इससे छोटे किसानों तथा अनाज के कारोबार में विभिन्न स्तरों पर लगे सभी लोगों की अच्छी आमदनी होती है।
- कृषि-प्रसंस्करण, खास तौर से पोषक आहारों के उत्पादन में, आधुनिक तरीके अपनाने से पारंपरिक और अपारंपरिक, दोनों तरह के ग्राहकों और बाज़ारों को आकर्षित किया जा सकता है। इन ग्राहकों में युवा, शहरी उपभोक्ता, पर्यटक आदि भी शामिल हैं। उत्पादों के मूल्य-संवर्धन से इनके बाज़ार का भी विस्तार होता है, खाद्य तथा पोषण सुरक्षा में वृद्धि होती है तथा छोटे किसानों की आमदनी में वृद्धि होती है।

6. मोटे अनाजों का व्यापार बढ़ने से वैश्विक खाद्य प्रणाली में विविधता बढ़ेगी।

- सतत विकास लक्ष्य-8 –सम्माननीय आजीविका तथा आर्थिक प्रगति और सतत विकास लक्ष्य-12 –टिकाऊ उपभोग तथा उत्पादन
- ज्वार सहित मोटे अनाज इस समय वैश्विक धन्य व्यापार का मात्र 3 प्रतिशत हैं। वैश्विक बाज़ार की मजबूती बढ़ाने तथा इसे खाद्यान्न बाज़ार में अचानक आ सकने वाले बदलावों को झेलने लायक बनाने के लिए मोटे अनाज महत्वपूर्ण विकल्प साबित हो सकते हैं। इनके अधिक उत्पादन से अनाजों में विविधता बढ़ेगी और बाकी अनाजों के उत्पादन में अचानक कमी होने की स्थितियों में खाद्य सुरक्षा बनी रहेगी।
- मोटे अनाजों के उत्पादन की मात्रा और कीमतों को लेकर बाज़ारों का उचित स्वरूप और पारदर्शिता सुनिश्चित की जानी चाहिए। तभी इनके उत्पादन में स्थायित्व और टिकाऊपन बना रहेगा। यह सुनिश्चित करना ज़रूरी है कि दूसरे अनाज व्यापारियों की तरह मोटे अनाज के व्यापारियों को भी उपलब्ध आधुनिक संसाधनों (जैसे डिजिटाइज़ेशन आदि) के लाभ मिलें ताकि दूसरे अनाजों की तरह मोटे अनाजों को भी अतिरिक्त मूल्य मिल सके और इसके उत्पादकों की भी आमदनी बढ़ सके। ■

स्रोत: पत्र सूचना कार्यालय तथा खाद्य और कृषि संगठन